भूदान-प्रवृत्तिका लेखा-जोखा

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २३ अप्रैल, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

सम्मान्योंकी आवभगत

अुत्तर प्रदेशसे 'हरिजन' के अेक पाठकने निम्नलिखित शिकायत लिख भेजी है :

"आजकल अेक फैशन चल गयी है कि समारंभ, अुद्घाटन, शिलान्यास आदि जितने भी समारोह हों सब मंत्रियों या दूसरे सरकारी अधिकारियोंके हाथों ही सम्पन्न कराये जायं। यह शिकायत खासकर मंत्रियोंके खिलाफ ज्यादा है। अैसे किसी कामके लिअे मंत्री जब भी कहीं जाता है, तो वहां सरकारकी सारी मशीनरी बंद पड़ जाती है और सरकारी कर्मचारी अपना समस्त ध्यान मंत्री पर केन्द्रित कर देते हैं। यहां तक कि न्यायालयोंमें चल रहे मुकदमें भी स्थगित हो जाते हैं, क्योंकि मजिस्ट्रेट भी मंत्रीकी सेवामें नियुक्त रहते हैं। तहसीलदारसे लगाकर कलेक्टर तक सब लोग अिसी काममें जुट जाते हैं। स्थानीय पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट और अुसका अमला भी अिसीमें लगा रहता है। जरा सोचिये कि अिस तरह शहरके अेक छोटे-मोटे आयोजनके कारण समय, शक्ति और पैसेकी कैसी भयंकर बरबादी होती है। और अिसके सिवा, ये आयोजन भी कितने सस्ते हो गये हैं। निमंत्रित लोग अुनका अुपयोग समाजमें अपनी प्रतिष्ठा बढ़ानेके लिअे या कोअी दूसरा छोटा-मोटा लाभ अुठानेके लिअे करते हैं। राजनीतिक आवश्यकताओंके अनुरोधसे नौकरियां पैदा की जाती और भरी जाती हैं। जिसे अपनी जिन्दगीमें शिक्षा, स्वास्थ्य या कृषिसे कोअी लेन-देन नहीं रहा, वही मंत्री बनकर अेक ही दिनमें अुसका विशेषज्ञ बन जाता है और अुस पर व्याख्यान झाड़ने लगता है। यह कैसी विडम्बना है! क्या विशेषज्ञोंकी कोअी कमी है? क्या अैसा नहीं हो सकता कि ये सब समारोह दूसरे व्यक्तियोंके हाथों सम्पन्न कराये जायं? क्या समय नहीं आ गया है कि अिन सरकारी अधिकारियों पर रोक लगायी जाय और अुन्हें अपना समय और शक्ति सरकारी काम करनेमें ही खर्च करनेके लिअे कहा जाय? बड़े लोग अिस समस्या पर ध्यान दें और अुचित आदेश निकालकर अिस गड़बड़का अन्त करें, अिस बातकी सख्त जरूरत है।"

मेरा खयाल है कि दूसरे प्रान्तोंमें भी कम-ज्यादा अैसी ही हालत होगी। अैसा मैं अिसलिअे कहता हूं कि यह बीमारी हमारे लोगोंकी विशिष्ट मनोरचनाकी अुपज है। मुझे लगता है कि हम लोग राजसत्ताके पूजक हैं; शायद अिसलिअे कि दीर्घ काल तक हम राजाशाही या नौकरशाहीके निरंकुश शासनमें रहे हैं। हमें चाटुकारी करने और करानेका शौक है। अैसे अवसरों पर मंत्रियोंकी सत्ता और अुनके महत्त्वकी छायामें बैठकर परोक्ष रूपमें अुस सत्ता और महत्त्वका अनुभव करना हमें अच्छा लगता है। अिस सबसे यही सूचित होता है कि हमारे यहां अभी लोकशाहीकी बचपनकी अवस्था चल रही है। हमें अभी भी यह सीखना बाकी है कि सरकार या शासन-संस्था दूसरी सामाजिक संस्थाओंकी तुलनामें कितनी भी महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, वह राज्यके समकक्ष नहीं है। लोकतंत्रमें राज्य तो जनता स्वयं है और सामाजिक जीवन तथा पुरुषार्थके दूसरे क्षेत्र भी हैं, जो यदि अधिक नहीं तो कम-से-कम शासन-संस्था जितने ही महत्त्वपूर्ण और सम्मान्य हैं। जब हम यह सीख लेंगे, तभी हमारे सार्वजनिक जीवनमें वह संतुलन आयेगा, जो अेक परिपक्व लोकशाहीमें होता है; और तभी अुस बुराअीसे हमारी रक्षा होगी, जिसे मैंने यहां 'सम्मान्योंकी आवभगत' कहा है।

पत्रलेखकका यह कथन यदि सही हो कि अैसे अवसरों पर सरकारकी सारी मशीनरी अिन सम्मान्य अतिथियोंकी आवभगतमें व्यस्त हो जाती है, तो संबंधित लोगोंको अुस पर ध्यान देना चाहिये।

६–४–'५५ मगनभाई देसाई

पुनश्च : अूपर जो पत्र अुद्धृत किया गया है, अुससे ठीक अुलटा नीचे दिया जा रहा चित्तोड़गढ़, ६ अप्रैलका यह हर्षप्रद समाचार है :

"चित्तौड़के पास अेक छोटे रेलवे क्रासिंग पर आज दो चौकीदारोंने प्रधानमंत्रीकी मोटरको १० मिनट तक रोक रखा। प्रधानमंत्रीके साथी अधिकारियोंने जब अुनसे जबरदस्ती फाटक खुलवानेकी कोशिश की तो अुन लोगोंने साफ अिनकार कर दिया।

"श्री नेहरूने यह सुनकर चौकीदारोंकी बातका समर्थन किया। अुन्होंने कहा, 'वे लोग ठीक कर रहे हैं। वे अपना कर्तव्य कर रहे हैं। हम लोग मोटर छोड़ दें और कुछ दूर पैदल ही क्यों न चलें?'

"श्री नेहरू अपनी मोटरसे अुतर पड़े और रेलवे लाअिनको पैदल पार किया। वे चित्तोड़गढ़-प्रवेश समारंभके बाद भूपाल भवनकी ओर जा रहे थे, जहां अुनके दोपहरके भोजनका आयोजन था। जाते हुअे श्री नेहरूने चौकीदारोंको अुनके कर्तव्य-पालनके लिअे बधाअी दी।"

११–४–'५५
(अंग्रेजीसे) म० प्र०

हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण
गांधीजी
संपादक : भारतन् कुमारप्पा
कीमत १–८–० डाकखर्च ०–५–०
नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–१४

कारखाने और बेकारी

ता० १–४–'५५ का 'अे० आअी० सी० सी० अिकानॉमिक रिव्यू' जवाहरलालजीके अेक भाषणसे अुद्धरण देता है, जिसमें अेक वाक्य अैसा आता है:

"चाहें तो कारखानोंको बन्द करके भारतकी बेकारी अिसी वक्त दूर कर सकते हैं। अुस हालतमें सबको काम तो मिलेगा, लेकिन अेकंदर रोजाना जो कुछ मिलता है — मान लीजिये १ रुपया — अुसके चार आने हो जायंगे। यह कठिनाअी पैदा होगी।"

क्या यह डर सच्चा है? अर्थशास्त्रकी दृष्टिसे यह कथन ठीक माना जायगा? मुझे तो शंका है। कोअी अर्थशास्त्री अिस विषयमें अपनी राय दे तो ठीक होगा।

परन्तु अिस वाक्यमें दो-तीन दूसरी बातें भी हैं, जो ध्यान देने जैसी हैं। अुसमें यह माना गया है कि बेकारीका कारण कारखाने हैं। अर्थात् यहां अुन कारखानोंसे मतलब है, जो लोगों द्वारा स्वयं पैदा किया जा सकनेवाला माल तैयार करते हैं। अुदाहरणके लिअे, कपड़े, तेल, शक्कर, जूते वगैराके कारखाने।

दूसरी महत्त्वकी बात यह है कि बेकारी दूर करनेके लिअे ये कारखाने बन्द किये जाने चाहियें — बन्द किये जा सकते हैं। सबसे पहले कपड़ेके बारेमें अैसा करना जरूरी है, और अुसके स्थान पर खादीको सारे देशमें जारी करना चाहिये। क्योंकि अिसके लिअे हमने १९२० से काफी तैयारियां की हैं।

अैसा करनेमें दो सवाल अुठते हैं: (१) देशके सब लोगोंको काममें लगना चाहिये; (२) अैसा करनेसे देशकी सम्पत्ति घटनी नहीं, बल्कि बढ़नी चाहिये।

दूसरी बातका पहले विचार करें। यह तो स्पष्ट है कि अगर देशके सब लोग काममें लग जायं और वे कारखानोंका काम कर दें, तो देशकी सम्पत्ति घटनी नहीं चाहिये। अिसके विपरीत, अगर लोगोंको अिस तरह रोजी मिलने लगे, तो बेकार बैठे हुअे अनेक लोगोंको काम करनेकी प्रेरणा मिलेगी। अिससे अपने-आप अधिक अुत्पादन होने लगेगा। अिसके फलस्वरूप मालकी तंगी भी नहीं रहेगी। और अगर सब लोग काम करने लगें तो खरीद-शक्ति भी बंटेगी। अिससे हर आदमी कम-ज्यादा मात्रामें अपनी जरूरतका माल खरीद सकेगा।

अिसलिअे अैसा लगे बिना नहीं रहता कि मजदूरी घटनेकी या सम्पत्ति कम होनेकी जो बात कही जाती है, अुसमें कहीं भारी गलती हो रही है। अगर यह कहा जाता हो कि कारखानेके मजदूरको मिलनेवाली मजदूरीकी तुलनामें बेकार आदमीको हाथ-कामसे जो कुछ मिलेगा वह कम होगा, तो यह दलील आंकड़ोंके बल पर भले सच साबित कर दी जाय, लेकिन सच्ची दृष्टिसे देखें तो वह भ्रामक ही है। यह तुलना भी गलत है। कारखानोंके मुट्ठीभर मजदूर अगर अपने असंख्य देशभाअियोंको बेकार रखकर केवल देखने भरके लिअे रुपयेकी मजदूरी कमायें, तो क्या वह सच्ची राष्ट्रीय सम्पत्तिकी द्योतक है? अिसमें समाजवादी बन्धुभाव और समानताका तत्त्व है या पूंजीवादी शोषण और स्वार्थपूर्ण असमानताका? क्या अिसे सम्पत्तिका न्यायपूर्ण बंटवारा कहा जायगा?

परन्तु सच्चा सवाल तो पहली बातमें ही है। देशके बेकार लोग श्रद्धा और विश्वासपूर्वक गृह-अुद्योगों और विकेन्द्रित अुद्योगोंमें काम करने लगेंगे या नहीं? कारखाने बन्द करनेका अर्थ यह है कि वे काममें लग जायं। लेकिन यह चीज कारखाने बन्द करनेसे ही अपने-आप नहीं हो जायगी। लोग काम करने लगें, अैसी चालना और प्रेरणा अुन्हें मिलनी चाहिये। यह काम आजकी सरकार करेगी? मुझे तो अिसमें भी शंका है।

आज देशकी सरकार यंत्रोद्योग और बड़े पैमानेके केन्द्रीय अुत्पादनकी ओर ताक रही है। यंत्रों और पूंजीके बल पर बड़े पैमाने पर होनेवाले अुत्पादनकी आडम्बरपूर्ण बातोंका अुसे मोह है। अिसकी योजनायें अुसे पसन्द हैं और अिसके लिअे वह करोड़ोंके कागजी नोट छापनेके लिअे भी तैयार है। सारे देशके करोड़ों लोग अेक शक्तिके रूपमें काममें लगें, अिसमें जो महान क्रान्ति और अपार अुत्पादन-शक्ति निहित है, अुसकी ओर हमारी सरकारका ध्यान नहीं जाता। सच पूछा जाय तो सच्ची क्रान्ति अिसी बातमें है। अिसके बिना भारतमें सच्चा स्वराज्य या सच्चा समाजवाद शायद ही कायम हो सकेगा। यह श्रद्धा आज हमारी सरकारमें नहीं है। अिसीलिअे वह लोगोंको कामसे लगनेकी प्रेरणा नहीं दे सकती। और अैसा न कर सके तो वह कारखानें भी कैसे बन्द कर सकती है? दोनों बातें परस्पर सम्बद्ध हैं: लोग खुद अपनी जरूरतें पूरी करने लगेंगे, लेकिन तभी जब कारखानोंकी होड़ बन्द हो जाय। अिस दुश्चक्रको तोड़ना चाहिये। अर्थात् कारखानोंकी होड़ पर तुरन्त नियंत्रण लगाया जाना चाहिये और क्रम क्रमसे अुन्हें बन्द हो जाना चाहिये। जैसे-जैसे यह चीज आगे बढ़ेगी, वैसे-वैसे लोग अपने-आप काम बढ़ाते जायंगे। बेकार लोग बेकारीको पसन्द नहीं करते; लेकिन जो अर्थ-व्यवस्था अुन पर बेकारी लादे अुसमें वे बेचारे क्या कर सकते हैं? आज भारत-सरकारके सामने यही प्रश्न है। अिसलिअे रोजी या मजदूरी घटनेके डरको झूठा हौवा मानकर दूर रखना चाहिये। क्योंकि बेकारी-निवारण हमारा सबसे पहला काम है, और जहां सारे लोग काम करते हैं, वहां आवश्यक मजदूरी अपने-आप प्राप्त हो जाती है। विकेन्द्रित अुद्योगीकरणकी यही खूबी है। किन्तु आजके अर्थशास्त्रने अिस प्रश्नका अभी तक अध्ययन किया ही नहीं है। यह अुसका अेक बड़ा अर्थशास्त्रीय दोष माना जायगा। भारतको विकेन्द्रित अुद्योगीकरणके सच्चे अर्थशास्त्रका विकास करना है।

अैसा कहा जाता है कि हाथ-अुद्योगोंमें अच्छे और शक्तिशाली नये औजारों तथा बिजलीका अुपयोग होना चाहिये। अिसके लिअे कौन ना कहता है? लेकिन किसीने अैसे औजारोंकी खोज की है? वे अितने सस्ते होंगे कि सब कोअी अुन्हें रख सकें? और बिजलीके अुपयोगकी बातें करना तभी शोभा देगा, जब गांवोंमें बिजली सबको पुसानेवाले भावों पर पहुंचाअी जाये। आज तो राष्ट्रके करोड़ों रुपये खर्च करके जो बिजली पैदा की जाती है, अुसका अुपयोग सस्ते भावसे बड़े बड़े अुद्योग और शहर अपने आरामके लिअे करते हैं! क्या अिसे न्याय कहा जायगा? सच तो यह है कि शहरोंके बनिस्बत गांवोंको कम भावसे बिजली मिलनी चाहिये। तभी यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रकी सम्पत्ति बिजली पैदा करनेके लिअे खर्च करनेमें न्याय है। आज गांवोंको नुकसान पहुंचाकर शहर मौज अुड़ा रहे हैं। अिस कथनमें शहरोंसे ओर्षा करनेकी बात नहीं है, हम तो केवल वस्तुस्थिति बताना चाहते हैं। सच्ची और न्यायपूर्ण व्यवस्था तो यह है कि शहरोंके साथ गांव भी आगे बढ़ें। अिसकी कुंजी अिस बातमें है कि हम सबसे पहले बेकारी दूर करनेके काममें अेकाग्र मनसे लग जायं। अिसका मार्ग है गृह-अुद्योगों और ग्रामोद्योगोंका विकास। अुन्हें चलाने और प्रेरणा देनेमें ही भारतकी सच्ची क्रान्ति समाअी हुअी है। बड़े-बड़े कारखाने और बिजलीके बांध शानदार और तड़क-भड़ककी चीजें भले मालूम हों, लेकिन अुनमें क्रान्तिकी शक्ति नहीं है, क्योंकि वे जड़ सिद्धियां हैं। चेतन सिद्धि तो देशके करोड़ों लोगोंको कामसे लगानेमें है। अुसका मार्ग सर्वोदयका अर्थशास्त्र है, यंत्रोद्योगोंका अर्थशास्त्र नहीं।

५–४–'५५
(गुजरातीसे)

मगनभाअी देसाअी

नयी आर्थिक नीतिके सिद्धान्त—१

आवड़ी-कांग्रेसका आदेश

कांग्रेसने अपने आवड़ी-अधिवेशनमें कल्याण-राज्य और समाजवादी अर्थव्यवस्थाकी स्थापनाके अपने ध्येयकी घोषणा की। अिस ध्येयकी सिद्धिके लिअे अुसने बताया कि देशकी आर्थिक नीतिका लक्ष्य बहुलता, न्यायपूर्ण वितरण और "लोगोंको अधिकाधिक कामधंधा देना होना चाहिये, ताकि १० सालकी अवधिमें देशके सब लोगोंको काम दिया जा सके।" अिस तिहरे आदेशका मतलब केवल अितना ही नहीं है कि अुत्पादनके साधनों पर समाजका अधिकार कायम किया जाय, बल्कि अुसमें आर्थिक और सामाजिक ढांचेका पुनर्गठन करनेकी बात भी आ जाती है, जिससे सब लोगोंको कामसे लगाकर राष्ट्रीय संपत्तिके न्यायपूर्ण बंटवारेको निश्चित बनाया जा सके। अिस तरह अुस आदेशमें अैसे समतावादी समाजकी स्थापना पर जोर दिया गया है, जो अधिकतर सहकारी अर्थ-रचनाके भीतर काम करे।

बेकारीका विस्तार

२. आज देशमें बेकारोंकी संख्यामें शीघ्रतासे जो वृद्धि हो रही है, अुसके कारण यह परिवर्तन अनिवार्य हो गया था। १९५१ से ५४ के दरमियान खेती और अुद्योगोंके अुत्पादनमें निर्धारित लक्ष्यों तक पहुंच जाने पर भी देशमें कामधंधा देनेके अवसर आवश्यकताकी वृद्धिके अनुसार नहीं बढ़ सके। श्री सी० डी० देशमुखके कथनानुसार, योजना-कमीशनने देशके विभिन्न भागोंमें बेकारीकी जो जांच कराअी थी, वह बताती है कि औसतन् ८ से १० प्रतिशत काम करने लायक लोगोंको अुत्पादक काममें लगाना जरूरी है। यद्यपि अिन आंकड़ों परसे कोअी सामान्य नियम बनाना संभव नहीं है और यह अन्दाज लगाना भी कठिन है कि खेती करनेवाली आबादीका दरअसल कितना हिस्सा दूसरे धंधोंमें लगानेके लिअे मिल सकता है, फिर भी बहुत मोटे तौर पर लगाये हुअे अन्दाजसे यह कहा जा सकता है कि लगभग १,५०० लाख काम करनेवाले लोगोंमें से लगभग १५० लाख लोग नये अुद्योग-धंधोंमें लगाये जानेके लिअे मिल सकते हैं। श्री देशमुखके कहे अनुसार, आबादीमें होनेवाली साधारण वृद्धिके फलस्वरूप हर साल काम करने लायक लोगोंमें जो १८ लाखकी कुल बढ़ती होगी, अुसे ध्यानमें रखते हुअे पूर्ण कामधंधेके लक्ष्यको सिद्ध करनेके लिअे अगले दस वर्षमें कुल २४० लाख लोगोंके लिअे या दूसरी पंचवर्षीय योजनाकी समाप्ति तक कुल १२० लाख लोगोंके लिअे कामधंधा पैदा करना होगा।

ग्रामोद्योगोंकी काम देनेकी शक्ति

३. यह बात दिनोंदिन ज्यादा महसूस की जाने लगी है कि लोगोंको बढ़ती हुअी मात्रामें ज्यादा काम देनेकी व्यवस्था तथा दस सालके भीतर देशके सब लोगोंको काम देनेके लक्ष्यकी प्राप्ति तभी संभव होगी, जब ग्रामोद्योगोंका गहरा विकास किया जायगा। योजना-कमीशनने अिन अुद्योगोंकी काम देनेकी शक्तिको समझ लिया है, और अेक समान अुत्पादन-कार्यक्रमके अमलके लिअे अुचित परिस्थितियां पैदा करनेकी दृष्टिसे अुसने नीचेके अुपायोंमें से अेक या अधिक अुपाय सुझाये हैं: (१) अुत्पादनके क्षेत्र सुरक्षित रखना, (२) बड़े पैमानेके अुद्योगोंकी अुत्पादन-शक्तिको बढ़ने न देना, (३) बड़े पैमानेके अुद्योगों पर कर लगाना, (४) कच्चा माल मुहैया करनेकी व्यवस्था करना, और (५) शोध, ट्रेनिंग वगैराका मेल साधना। अुसने यह भी सुझाया कि अिन अुद्योगोंके विकासका अेक कार्यक्रम बनाने और अुस पर अमल करनेके लिअे सरकारी तंत्रसे बाहर अेक स्वतंत्र बोर्ड नियुक्त किया जाय।

सरकारकी गलत नीति

४. लेकिन पिछले दो बरसोंका अनुभव बताता है कि ग्रामोद्योगोंके काम कर सकनेके लिअे सही परिस्थितियां पैदा करनेके खातिर न तो सरकारने अिन अुपायोंको पूरी तरह स्वीकार किया और न अुन पर अुत्साहसे अमल किया। सरकारने हमेशा बड़े पैमानेके अुद्योगोंकी अुत्पादन-शक्तिके विस्तार पर रोक नहीं लगाअी और न ग्रामोद्योगोंके पक्षमें, कपड़ा-अुद्योगमें कुछ किस्मके कपड़ेके सिवाय, अुत्पादनके क्षेत्र सुरक्षित किये; दूसरी तरफ सरकार द्वारा बड़े पैमानेके अुद्योगों पर लगाये गये कर तथा ग्रामोद्योगोंको दी गअी आर्थिक सहायता किसी अुद्योगके विभिन्न विभागोंके बीच चल रही होड़को मिटानेमें कारगर सिद्ध नहीं हुअी, क्योंकि सरकारने अिन विभागोंको अेक संपूर्ण अिकाअीके अंग माननेके बजाय परस्पर विरोधी माना। अैसी हालतोंमें कमजोर ग्रामोद्योगोंके विकासको निश्चित बनानेके लिअे कोअी समान अुत्पादन-कार्यक्रम तैयार करना या अमलमें लाना संभव नहीं था।

समान अुत्पादन और समान मूल्य-नीतिकी जरूरत

५. देशकी जरूरतोंके मुताबिक लोगोंको कामधंधा देनेके अवसर पैदा करनेकी आवश्यकता और १९५१ की जनगणनाके आंकड़े, जो बताते हैं कि संपूर्ण अुत्पादक कामधंधेमें लगे हुअे लोगोंकी संख्याका ७२ प्रतिशत स्वतंत्र रूपसे काममें लगे हुअे लोगोंका है, अिस बात पर जोर देते हैं कि ग्रामोद्योगोंका विकास किया जाय। अुनकी काम देनेकी शक्तिका राष्ट्रहितमें पूरा अुपयोग करनेके लिअे यह जरूरी है कि किसी अुद्योगके अलग अलग विभागोंके बीच चल रही होड़को मिटाया जाय। अिस तरह अेक कारगर समान अुत्पादन-कार्यक्रम तैयार करनेकी नींव डाली जाय। लेकिन अैसे कार्यक्रम पर अमल करनेके लिअे अेक ढांचा तैयार करनेकी या समान मूल्य-नीति अपनानेकी जरूरत है, ताकि किसी अेक अुद्योगके अलग अलग विभागोंमें चलनेवाली होड़का अन्त हो जाय और अैसे लोगोंको अधिक नफा मिले जिन्हें अुसकी सबसे ज्यादा जरूरत है। अिस तरह समान मूल्य-नीति किसी अुद्योगके प्रत्येक विभागको अैसे साधन देती है, जिनके जरिये वह समान अुत्पादन-कार्यक्रममें अपना निर्धारित हिस्सा अदा कर सके। अिसलिअे यह नीति अुद्योगके संबद्ध और संपूर्ण विकासको सुगम बनाती है। अैसे सामाजिक दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण और आर्थिक दृष्टिसे कारगर विकासको निश्चित बनानेके लिअे अेक समान मूल्य-नीतिका होना आवश्यक है, जिससे:

(१) किसी अुद्योगके विभिन्न विभागोंके बीचकी होड़ दूर हो;

(२) राष्ट्रीय जरूरतोंके अनुसार अुत्पादन करना आसान हो;

(३) अुद्योगके पिछड़े हुअे विभागोंका दिनोंदिन ज्यादा टेकनिकल विकास होनेकी भूमिका तैयार हो; तथा

(४) अुद्योगके सारे विभागोंमें अेकसी मजदूरी मिलनेकी नींव पड़े।

केवल अैसी नीति ही अुन परिस्थितियोंको जन्म दे सकती है, जिनमें विकासकी आरंभ की हुअी कोअी पद्धति कुछ समय बाद सही ढंगसे अमुक अुद्योगके सारे विभागोंमें टेकनिकल सुधार कर सकेगी और समान मजदूरीकी बुनियाद डाल सकेगी, तथा समाजवादी ढंगकी वांछनीय समाज-रचना और अर्थ-रचनाको निश्चित बना सकेगी। [प्राप्त]

(अंग्रेजीसे) (अपूर्ण)

हरिजनसेवक

२३ अप्रैल　　१९५५

भूदान-प्रवृत्तिका लेखा-जोखा

१३ से १८ अप्रैल तक सारे देशमें भूदान संवत्सरी सप्ताह मनाया जा रहा है। १८ अप्रैल, १९५१ को पोचमपल्ली (तेलंगाना) में पहला भूदान मिला, अुसे आज चार वर्ष पूरे होते हैं और यह आन्दोलन नये वर्षमें प्रवेश करता है। अिस मौके पर पद-यात्राओं द्वारा अेक विशेष भूमि-क्रान्ति सप्ताह मनानेका प्रस्ताव पुरी सर्वोदय-सम्मेलनमें सर्व-सेवा-संघने पास किया। अुस निमित्तसे अिस कामका लेखा-जोखा निकालना ठीक होगा।

सन् १९५१ में पहले-पहल श्री विनोबाको भूदानका विचार सूझा। दूसरे वर्ष राष्ट्रके नाम अेक सार्वजनिक अपील निकाली, जिसमें अुन्होंने कहा,

> "मेरा अिस कामके लिअे तिहरा दावा है। अेक तो यह कि यह भारतीय सभ्यताके अनुकूल है; दूसरा, अिसमें आर्थिक और सामाजिक क्रान्तिका बीज है; और तीसरा, अिससे दुनियामें शान्ति स्थापनाके लिअे मदद मिल सकती है।" (भूदान-यज्ञ, पृ० ८)

बादके वर्षोंमें काम जिस तरह आगे बढ़ा, अुसने साबित कर दिया कि यह दावा गलत नहीं है।

शुरूमें २५ लाख अेकड़ भूमिका दान प्राप्त करनका लक्ष्य निर्धारित किया गया। अिसका लोगोंकी ओरसे जो अुत्तर मिला, अुसे देखकर भारतके कुल १ करोड़ बेजमीन परिवारोंके आंकड़ेके आधार पर, प्रत्येक परिवारके लिअे पांच अेकड़ जमीन मानकर, पांच करोड़ अेकड़ भूमि दानमें प्राप्त करनेका अन्दाज बांधा गया। यह भी सोचा गया कि यह काम सन् १९५७ तक पूरा हो जाना चाहिये।

५ करोड़ अेकड़के आंकड़े और अुतनी जमीन प्राप्त करनेकी अमुक वर्षोंकी अवधिके बारेमें कितने ही लोगोंको शंका थी। परन्तु भूदान कार्यके चढ़ते ज्वारमें अिस बात पर जोर न देकर शायद अैसा सोचा गया कि देशके सामने संपूर्ण कार्यके हिसाबका खयाल पेश किया जाय, तो अुससे दाताओं और कार्यकर्ताओंको अिस दिशामें अधिकसे अधिक काम करनेकी प्रेरणा मिलेगी। अुत्तर भारतके जमींदारी-प्रथावाले प्रदेशमें अिसका अच्छा जवाब मिला और दानका आंकड़ा लगभग ४० लाख अेकड़ तक पहुंच गया।

अिस चीजने बाहरकी दुनियाका भी ध्यान खींचा और विदेशोंके युद्धनिषेधक तथा शान्तिवादी मंडलोंमें अिस कामके लिअे विशेष रस पैदा हुआ। यह स्वाभाविक था। क्योंकि स्वराज्य और स्वतंत्रता आनेके बाद शान्तिपूर्ण ढंगसे सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति करनेका यह अेक नया प्रयोग था। भूमिदान अिसका साधन बनाया गया। बेजमीन मजदूर और काश्तकार वर्ग भारतकी आबादीका सबसे बड़ा गरीब भाग है; अुन्हें अूपर अुठाना ही अिसका मुख्य अुद्देश्य था। अिसके लिअे जमीनवाले और धनी वर्गोंको न्याय और समानताके आधार पर प्रेरित किया जाता था कि आप लोग अिन गरीब वर्गोंके लिअे अपना फर्ज समझकर दान-धर्म स्वीकार करें। यह भी निश्चित रूपसे बताया गया कि जमीनवाले अपनी जमीनका छठा हिस्सा दें और धनवाले अपनी आयका दसवां हिस्सा दें।

अिस प्रकार तय होते गये कार्यक्रममें पिछले वर्ष अेक और स्पष्टता की गअी और यह बात जोड़ी गअी कि भूदान-आन्दोलनमें खादी-ग्रामोद्योग अुसके अभिन्न अंग हैं — अुसका आधार रहेंगे। और अब जमीनके बंटवारे पर जोर देना चाहिये, जिससे भूदानके द्वारा जो चित्र हम खड़ा करना चाहते हैं, वह लोगोंके सामने खड़ा हो। अुससे अिस कार्यक्रमकी शक्तिका भी लोगोंको खयाल होगा और वह आगे जमीन पानेमें अच्छा प्रेरक बल सिद्ध होगा।

मार्चके अन्तमें अिस वर्षका सर्वोदय-समाज-संमेलन पुरीमें हुआ, तब तक भूदान-आन्दोलनका काम संक्षेपमें यहां तक बढ़ा था, अैसा कहा जा सकता है। अुसने देशव्यापी असर पैदा किया। स्वराज्य सरकारोंकी स्थापना होन पर कांग्रेसियों और रचनात्मक कार्यकर्ताओंको अपने कार्योंके लिअे अेक केन्द्र मिल गया। अुनकी विविध संस्थाओंका अेकीकरण करनेके लिअे 'सर्व-सेवा-संघ' नामकी संस्था रची गअी, जो आज मुख्यतः भूदानका काम संभाल रही है।

भूदान-आन्दोलनका राजनीतिक असर भी हुआ। कोअी भी रचनात्मक कार्य अितने वेगसे चले कि जनता अुसे अपना ले, वह प्रजाव्यापी बने और लोकमानसको प्रभावित करे, तो अितनेसे भी वह राजनीतिक बन ही जाता है। प्रत्येक रचनात्मक कार्यकी यह फलश्रुति है।

भूदान-कार्य यह चीज स्पष्ट बताता है। और भूदानके सम्बन्धमें यह फल अेकदम आया, अिसका खास कारण अुसकी अुत्पत्ति है। यह प्रवृत्ति तेलंगानाकी विषम परिस्थितिका शान्तिसे सामना करनेकी जरूरतमें से अुत्पन्न हुअी। साम्यवादी पार्टी अुस प्रदेशमें अपनी हिंसक नीतिसे बेजमीन किसानोंमें अपने ढंगकी क्रान्ति करने लगी थी। अुसके त्रासके अुत्तरमें यह शान्त भूमि-क्रान्तिका मार्ग प्रकट हुआ। यह सफल हुआ और अपने तेजके कारण वह अेकदम राजनीतिक असर डालनेवाला भी बन गया।

अिस कारण सरकार और राजनीतिक पार्टियोंकी नजर अपने-आप अुसकी ओर गअी। कांग्रेस और प्रजा-समाजवादी पार्टी अिनमें मुख्य मानी जायंगी। साम्यवादी पार्टीने शुरूमें अिस प्रवृत्तिका थोड़ा स्वागत किया, लेकिन बादमें वह अिसके विरुद्ध हो गअी। हिन्दू महासभा जैसी सम्प्रदायवादी संस्थाने अिसमें कोअी खास दिलचस्पी नहीं बताअी, यह आश्चर्यकी बात है।

कांग्रेसने आरंभसे ही अिसका समर्थन किया और अपने ढंगसे अिसकी मदद की। समाजवादी पार्टीके दो अग्रगण्य नेता श्री कृपालानी और श्री जयप्रकाशनारायणके अिसमें रस लेनेके कारण अैसा लगा कि अुस पार्टीने अिस काममें खास मदद की। अुसमें भी श्री जयप्रकाशनारायण 'जीवन-दान' करके अिसमें शामिल हुअे, अुससे और भी ज्यादा अैसा लगा। अिसके अलावा, अिस पार्टीने भूदानके कामको अपनी किसान प्रवृत्तिके साथ जोड़ कर, अुदाहरणके लिअे पारड़ीमें, अिसे खेड़-सत्याग्रह तक पहुंचाया। मतलब यह कि राजनीतिक पार्टियोंने अपने-अपने ढंगसे भूदान-कार्यमें रस बताया।

श्री विनोबाने भूदान-आन्दोलनके सम्बन्धमें अेक विशेष रुख बताया। अुन्होंने कहा कि भूदान किसी पार्टीका काम नहीं है। किसी भी पार्टीका सदस्य अिसमें शामिल हो सकता है, अगर अिस कार्यमें अुसका विश्वास हो। और अिस नीतिके आधार पर आगे चल कर अुन्होंने अपने भूदान-प्रचारमें अेक-दो नये विचार और जोड़े, जिन पर अिस मौके पर ध्यान देना चाहिये। कामकी दृष्टिसे भी अुन्हें स्पष्ट रूपमें समझ लेना जरूरी हो गया है।

श्री विनोबाने लोकशाही और राजनीतिके बारेमें दो-अेक नये तत्त्व हमारे सामने रखे हैं — (१) लोकशाहीकी मत-पद्धतिका सिद्धान्त तथा किसी पार्टीकी राज्य-पद्धतिका सिद्धान्त ठीक नहीं है। बहुमतसे नहीं, बल्कि सर्वसम्मतिसे काम करे अैसी निष्पक्ष राजनीति होनी चाहिये। (२) राज्यसत्ता हिंसा-

मूलक है, अिसलिअे अुसके द्वारा नहीं बल्कि जनसत्ता द्वारा काम करना चाहिये। अिससे कानून-बल और अुसकी संस्थाओंके प्रति अेक प्रकारकी अवगणनाका भाव पैदा किया गया। स्वराज्य-आन्दोलनके जमानेमें धारासभा-त्याग वगैराके जो भाव लोगोंमें फैलाये गये थे, अुनसे यह कुछ मिलती-जुलती विचार-सृष्टि मालूम होती है। पिछले वर्षोंमें भूदान-आन्दोलनके सम्बन्धमें जो विचार देशके सामने रखे गये, अुन परसे मैंने अूपरका सार निकाला है। मैं मानता हूं कि अिसमें मैं कोअी गलती नहीं कर रहा हूं। भूदान-आन्दोलनका लेखा-जोखा निकालते समय अुसके अिस पहलूका भी विचार करना चाहिये, क्योंकि आज भारतके नवनिर्माणके समय अुसके अिन अंगों पर भी विचार करना प्रासंगिक हो जाता है।

अेक दूसरे पहलूकी भी यहां अुपेक्षा नहीं की जा सकती। जो लोग भूदान-आन्दोलनमें शरीक हुअे, अुनके साथ अपनी अमुक राजनीति और अुसके अच्छे-बुरे अनुभव तो थे ही। अुनमें सभी केवल धर्मबुद्धिसे या आत्मोन्नतिके लिअे रचनात्मक सेवा-दृष्टि रखनेवाले नहीं थे। मैं यह नहीं कहता कि अिसमें कोअी दोष है। यह बिलकुल स्वाभाविक था। परन्तु अुसका असर तो रहेगा ही। और अिसीलिअे भूदान-आन्दोलनको राजनीतिसे दूर रखनेका जाग्रत प्रयत्न होना चाहिये। अिस सम्बन्धमें श्री विनोबाका नेतृत्व हमेशा सावधान रहा है, यह अेक ध्यान देने लायक बात है।

अन्तमें पूरे होनेवाले वर्ष पर आयें। अिसमें जमीनके बंटवारेका काम और ग्रामोद्योगोंकी प्रगतिका काम मुख्यतः आगे बढ़ाया गया। अिस समयमें खादी-ग्रामोद्योग बोर्डकी स्थापना हुअी, जिसके द्वारा दूसरे कामोंको काफी वेग मिला। बेकारी-निवारणको देशकी योजनाओंमें स्थान मिला, और अुसका अुपाय ग्रामोद्योग हैं अिस विचारको मान्यता प्राप्त हुअी तथा अुस पर अमल होने लगा।

भूमि-वितरणका काम करते हुअे मालूम हुआ कि अुसमें सरकारी तंत्रकी अनेक प्रकारकी सहायता चाहिये। कुछ बातोंमें अुसके लिअे कानूनकी अनुकूलता भी होनी चाहिये। वह अनुकूलता राज्य-सरकारोंकी ओरसे मिलने लगी। लेकिन नया अनुभव यह हुआ कि बंटवारेका काम बड़ा पेचीदा, नाजुक और कठिन भी है। अुसके लिअे कार्यकर्ताओंमें अेक खास योग्यता, शक्ति और बड़ीसे बड़ी सावधानी होनी चाहिये; निष्पक्षता, न्यायवृत्ति और सूक्ष्म विवेक होना चाहिये। यह कठिन काम जितना सोचा गया था अुतना नहीं हो सका। भूदान-प्राप्तिके बारेमें भी अमुक अन्दाज आता गया। पहलेके वर्षोंकी तुलनामें अुसमें मंदी दिखाअी दी, जो भूदानके आंकड़ोंसे मालूम होती है।

काम यहां तक पहुंचने पर पिछले माहमें पुरी सर्वोदय-सम्मेलन हुआ। अुसके कार्य पर अूपरकी समीक्षाकी भूमिकामें विचार किया जाना चाहिये। तथा चार वर्षके लेखे-जोखे परसे कुछ जो तात्त्विक मुद्दे खड़े होते हैं अुनकी भी जांच करना चाहिये। अिसकी आगे चर्चा करेंगे। कार्यकर्ताओं और पाठकोंसे मेरा निवेदन है कि वे अूपरके लेखे-जोखे पर मनन करें और अपने विचार मुझे बतायें। हमारे राष्ट्रीय कार्यकी दिशा तय करनेकी ताकत रखनेवाले अिस कामके बारेमें हमें गंभीरतासे आत्म-निरीक्षण करना चाहिये।

१६-४-'५५ मगनभाई देसाई

(गुजरातीसे)

भूदान-यज्ञ
विनोबा भावे
कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०
नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

अुड़ीसामें विनोबा — २

१

देश-विदेशके लोग आते हैं और विनोबाजीसे बार-बार पूछते हैं, "दुनियाको युद्धसे छुटकारा कब मिलेगा?" अिंग्लैंडके अेक समाजवादी नवयुवकने यही सवाल ताराकोटमें पूछा था।

विनोबाजीने अपने भाषणमें कहा, "जमीनका बंटवारा करनेका काम जिसने हाथमें लिया है, अुससे लड़ाअियां कैसे बन्द होंगी, यह सवाल क्यों पूछते हैं? कारण यह है कि यह शान्ति और प्रेमका तरीका अैसा है कि अिस तरीकेको यश मिला तो अुसके जरिये कुछ न कुछ असर दुनिया पर हो सकता है, शान्तिकी राह दुनियाको मिल सकती है, अैसा आभास होता है।"

न्यूयॉर्कमें बाअिबलको जमीनके अंदर गाड़ा गया है। लंकाके बौद्धोंने तय किया है कि अेटम और हाअिड्रोजन बमसे बचानेके लिअे अपने बड़े भारी ग्रन्थ त्रिपिटकको ताम्र पर लिखकर अच्छी तरहसे जमीनके अन्दर सुरक्षित रखा जाय। अिस मजेदार खबरका अुल्लेख करके विनोबाजीने कहा, "यह हाअिड्रोजन बम आदिके कारण अितना भयानक खतरा पैदा हुआ है कि अुससे जमीनके अन्दरसे बाअिबल और त्रिपिटक निकालकर पढ़नेवाला कोअी शख्स ही नहीं रहेगा। मतलब यह कि सब लोग भयभीत हो गये हैं और आगे क्या-क्या संहार होगा, अिसका अन्दाज मनमें लगा रहे हैं। लेकिन अुन ग्रंथोंको जमीनमें रखनेके बजाय यदि अुनको जीवनमें लाया जाय, तो दुनियाको बड़ा भरोसा होगा और दुनिया बच जायगी।"

स्त्रियोंकी शक्तिका आवाहन करते हुअे अुन्होंने कहा, "लड़ाअियां रोकना आपके हाथमें है। आप सामने आअिये। घरका कारोबार करती हो, पर अब समाजका कारोबार भी अपने हाथोंमें लीजिये। अपने भाअियोंको यह समझा दीजिये कि जमीन सबको मिलनी चाहिये, बांट दो जमीन। अुन पर अंकुश रखो। अगर वे गांवके मसले प्रेमसे नहीं हल करते और झगड़े करते हैं, तो आप जाहिर कर दीजिये कि हम आपके लिअे रसोअी नहीं बनायेंगी और खुद भी नहीं खायंगी। जिनके हाथमें बच्चोंको बचपनसे तालीम देनेका काम है अुनके हाथमें सब कुछ है। यह ताकत जब बहनोंमें प्रगट होगी, तो हिन्दुस्तानमें भूदान-यज्ञ यशस्वी होगा, सर्वोदय होगा और लड़ाअियां रुकेंगी।"

अेक स्विस पत्रकारको विनोबाजीने संपत्ति-दानकी कल्पना समझाअी, तो अुन्होंने कहा कि युरोपमें यह मुझे संभव नहीं मालूम होता। अुस पर विनोबाजीने कहा, "हर जगह यह संभव हो सकता है बशर्ते कि हम खुदके जीवनसे आरंभ करें और जिस विचारका हम प्रचार करते हैं, अुस पर अमल करें। कोअी भी नैतिक आन्दोलन प्रथम व्यक्तिके जीवनसे आरंभ होता है, फिर अुसके मित्रों पर असर होता है और बादमें वह सारे समाजमें फैलता है।"

२१-२-'५५

२

सअीदपुरमें नया नारा 'भूमि-विप्लव सफल हो' सुनकर विनोबाजी प्रसन्न हो गये। पाठकोंको याद होगा कि विनोबाजीने अुत्कलमें प्रवेश करते ही जाहिर किया था कि हम अुत्कलमें परिपूर्ण दर्शनकी यानी भूमि-क्रान्तिकी अपेक्षा रखते हैं। भूमिकी मालकियत नहीं हो सकती। अिस विचारको कबूल करना और गांवकी कुल जमीन गांवकी बनाना यह है भूमि-क्रान्तिका अर्थ।

किसीने अुनसे पूछा, "अुसके वास्ते आपकी योजना क्या होगी?"

अुन्होंने जवाबमें कहा, "क्रान्तिकी योजना यही होती है कि अुसमें योजना पर ही श्रद्धा नहीं रखनी होती है। जहां अेक योजना आती है, वहां अेक संगठन भी आता है और संगठन जहां हो गया वहां विचार मुक्त नहीं रहता और अुसके प्रचारके लिअे

मर्यादा आ जाती है। क्रान्तिके लिअे यह श्रद्धा बहुत जरूरी है कि मनुष्यमें विचारसे ही क्रान्ति होगी। हम जमीन पर घूमते हैं, जमीन मांगते हैं, पर हमारी श्रद्धा हवा पर ही ज्यादा है। हवा ही हमारा काम करेगी।"

ब्राह्मणी नदीके किनारे नारियल, काजू, आम अित्यादि अनेक वृक्षोंके बीच रमणीय अेकांत और शांत स्थानमें रामचन्द्रपुरके आश्रममें विनोबाजीका निवास रहा। वहां बुनियादी शाला है और कस्तूरबा-केन्द्रका काम चलता है। वरीके कस्तूरबा केन्द्रको राष्ट्र-माता कस्तूरबाके प्रयाण-दिन पर विनोबाजीने भेंट दी। वहां स्त्रियोंकी सभामें बाको श्रद्धांजलि अर्पण करते हुअे विनोबाजीने कहा, "जिन्होंने धर्मकार्यमें जिन्दगी बिताअी, अुनका मृत्यु-दिन यानी परमेश्वरसे मिलनेका दिन, अति पवित्र दिन मानते हैं। बा तो कोअी विद्वान स्त्री नहीं थीं, परंतु अुनमें धर्म-बुद्धि और बहुत ही निर्भयता थी। यह निर्भयता हमारी स्त्रियोंमें आनी चाहिये। स्त्रियां भीरु होती हैं, अुनकी रक्षा ही करनी पड़ती है अैसा अकसर माना जाता है। परंतु परमेश्वरका नाम लेकर वे निर्भय रह सकती हैं। यह कल्पना ही गलत है कि स्त्रियोंको ज्ञान-प्राप्तिका और स्वतंत्र पुरुषार्थका अधिकार नहीं है, बल्कि पुरुषोंकी सेवा करना ही अुनका कार्य है। यह विचार गलत है। सेवा करना अेक भाग्य है, परंतु सेवकके नाते गुलाम होनेकी जरूरत नहीं है। आजादीके साथ ही सेवा की जा सकती है, नहीं तो वह सेवा नहीं गुलामी कही जायगी। सेवकको नम्रता जरूर रखनी चाहिये, परंतु अिसके साथ-साथ निर्भयता और स्वतंत्रता भी जरूर चाहिये।"

प्रीतिपुरकी विशेषता यह रही कि अुस दिन श्रीमती चेस्टर बोल्स (श्री चेस्टर बोल्स, भूतपूर्व अमेरिकन दूतकी पत्नी) विनोबाजी से मिलने आअीं और अुन्होंने अेक दिन बड़े आनन्दसे यात्रामें बिताया। अुन्होंने विनोबाजीसे पूछा, "क्या आपको दुनियामें शांतिके लक्षण दिखाअी देते हैं?" विनोबाजीने जवाबमें कहा, "शान्तिके लक्षण दिखाअी देते हैं। आजकल लोग 'वन वर्ल्ड' (विश्वराज्य) की भाषा बोलते हैं, और विज्ञान भी अितना आगे बढ़ गया है कि अुसके प्रयोगसे दुनियामें या तो मानव-समाजका संहार हो जायगा या मनुष्यकी बुद्धि प्रगट होगी और जिन हाथोंने ये बड़े शस्त्र बनाये हैं अुन्हीं हाथोंसे ये शस्त्र खतम किये जायंगे। यही दो रास्ते मनुष्यके सामने हैं," और फिर मुस्कराते हुअे अुन्होंने कहा, "और फिर जो काम बाअिबल नहीं कर सकी वह विज्ञान करेगा।"

२५-२-'५५

३

सम्राट् अशोकको अहिंसाकी दीक्षा देनेवाली अिस धीर कलिंग भूमिमें संपूर्ण ग्राम-दानके लिअे हिम्मतसे पहला कदम अुठानेवाले गांव मानपुरमें विनोबाजीने प्रवेश किया। मानपुरवासियोंके हृदय आनन्दसे नाच रहे थे। गांवकी सफाअीमें गांववालोंके निर्मल हृदयका दर्शन हो रहा था। विनोबाजीने अुनको आशीर्वाद देते हुअे कहा, "आपने बहुत बड़ा धर्म-कार्य किया है। आपका भला होगा। मेरा गांवके लिअे अेक स्वप्न है, और मैं आशा करता हूं कि वह स्वप्न कमसे कम मानपुरमें पूरा होगा। क्योंकि यहांके लोगोंकी परमेश्वर पर और मानवता पर श्रद्धा दीखती है। अब मानपुरके लोगोंको प्रेम-धर्म सीखना है, और अेक-दूसरेके लिअे मर मिटना है। प्रेम-धर्मकी अेक ही शर्त है। कुछ न कुछ अुत्पादक परिश्रम करना चाहिये और मानपुरके लोगोंको समझना चाहिये कि न सिर्फ हमारी जमीन अेक हो गअी, बल्कि सारे हृदय भी अेक हो गये।"

फिर मानपुरके लोगोंको आवेश देते हुअे विनोबाने आगे कहा कि मनुष्यने व्यवहारके लिअे साधनके तौर पर पैसा निर्माण किया, और अुस पैसेको अपने जीवनमें सबसे प्रधान स्थान दे दिया। पैसेका जीवनमें अेक स्थान है, परंतु वह बिलकुल छोटा है। अुसके बदले अुसे सबसे बड़ा स्थान दे दिया, और लोग अुसके पीछे लग गये। परिणामस्वरूप आलसी लोगोंके हाथमें शक्ति चली गअी, जिन्होंने पैसेके आधार पर बिना काम किये भोगविलासका साधन अपने हाथमें कर लिया। जहां प्रेमकी जगह पैसेने ले ली, वहां मनुष्यके जीवनमें से मनुष्यता मिट गअी। अिसलिअे मैंने स्वप्न रखा है कि हिन्दुस्तानके देहात अैसे बनायेंगे, जो पैसेके फन्देसे मुक्त रहेंगे और अपने लिअे जीवनकी अधिकांश चीजें खुद ही बना लेंगे।

विद्यार्थी जब सवाल पूछते हैं, तो विनोबाजीको अुनका अुत्तर देनेमें बहुत आनन्द मालूम होता है। अेक दिन अेक विद्यार्थीने पूछा, "आज जिस तरह विज्ञान बढ़ रहा है क्या अुससे दुनियाका भला होगा?"

अपने भाषणमें अिस प्रश्नका जवाब देते हुअे विनोबाजीने कहा, "मैं तो विज्ञानका अुपासक हूं, अिसलिअे चाहता हूं कि विज्ञान खूब बढ़े। परंतु विज्ञानमें दुहरी शक्ति होती है। अेक होती है विनाशकी शक्ति, दूसरी होती है विकासकी शक्ति। वह सेवा भी कर सकता है और संहार भी कर सकता है। अग्निका अुपयोग चूल्हा जलानेमें करना है या घर जलानेमें, यह अक्ल विज्ञानमें नहीं है। वह आत्म-ज्ञानमें है। जैसे पक्षी दो पंखोंसे अुड़ता है वैसे मनुष्य आत्म-ज्ञान और विज्ञान अिन दो शक्तियोंसे अग्रसर होता है। मोटरमें अेक यंत्र गतिका और दूसरा यंत्र दिशा दिखानेका होता है। अुसमें से अेक भी यंत्र न हो, तो मोटरका काम नहीं चलेगा। जैसे हम आंखसे दिशा देखते हैं और पांवसे चलते हैं, अुसी परह आत्म-ज्ञान है आंख और विज्ञान है पांव। अगर अुस आत्म-ज्ञानका दर्शन मनुष्यको न हो तो वह अंधा कहां जायगा, कुछ पता नहीं। विज्ञानके बिना संसारमें कोअी कार्य नहीं हो सकेगा, और आत्म-ज्ञानके बिना विज्ञानको ठीक दिशा नहीं मिलेगी।

आजकलके वैज्ञानिक अगर यह प्रण करेंगे कि पैसेसे हम खरीदे नहीं जायंगे और विध्वंसात्मक शस्त्र बनानेमें हरगिज योग नहीं देंगे तो दुनिया बचेगी। लेकिन वैज्ञानिकोंको यह अक्ल तभी आयेगी जब समाजके हृदयसे मानवताकी पुकार अुठेगी।

विज्ञान और हिंसाके योगसे दुनिया बर्बाद होगी। विज्ञान बढ़ाना चाहते हैं तो अुसके साथ अहिंसा जोड़नी होगी, तभी दुनियामें स्वर्ग आयेगा। अिसके मानी यह हैं कि मनुष्य-मनुष्यके बीच जो समस्यायें हैं, अुन सबको अहिंसासे, शान्तिसे हल करना चाहिये।"

२-३-'५५

४

विनोबाजी सतत कार्यकर्ताओंकी चित्त-शुद्धि पर जोर देते हैं। वे तो कहते ही हैं कि बाहरकी दुनिया आअिनेके समान है। हमारे दिलमें अगर अच्छाअी है तो अुस आअिनेकी क्या मजाल है कि वह अुसमें बुराअी दिखाये। अेक जगह अेक कार्यकर्ताने प्रश्न पूछा था कि हमारी सेना नहीं बढ़ेगी तो काम कैसे फैलेगा? विनोबाजीने कहा कि कार्यकर्ताओंकी चित्त-शुद्धि बढ़ेगी, तो अुनके संपर्कसे दूसरे कार्यकर्ता भी खिंच आयेंगे। जैसे अेक दीपकसे दूसरा दीपक जलता है। वैष्णवोंकी मिसाल देते हुअे अुन्होंने कहा कि जो भगवत्-भावना अुनके चित्तमें थी वह हमारे चित्तमें होनी चाहिये। और अिस तरहकी भावना रखना हमारे लिअे आसान होगा, क्योंकि पत्थरकी मूर्तिमें परमेश्वरकी कल्पना करना जितना आसान होता है, अुससे ज्यादा आसान भूखे मानवमें अीश्वरकी कल्पना करना हो सकता है। मूर्ति-नारायणसे दरिद्र-नारायण कल्पनाके लिअे सुलभ है। अिसके लिअे सतत चिन्तन, मनन, विचारोंका अनुशीलन और परस्पर चर्चा करनी चाहिये, जिससे कि हमारी भावना दृढ़ हो

जाय। अुन्होंने कार्यकर्ताओंको व्यवहारके त्रिविध प्रकार बताते हुअे कहा, "कार्यकर्ताओंको हाथ-पांव, वाणी, मन, बुद्धि, अिन्द्रियों अित्यादि पर निरंतर अंकुश रखना चाहिये। सतत आत्म-परीक्षण करना चाहिये। दूसरी बात यह है कि दूसरे लोगोंके साथ जो व्यवहार होगा, अुसमें यह देखना होगा कि हम किसीकी निन्दा नहीं करते, जो नहीं देगा अुसका भी आदर करते हैं। मनमें श्रद्धा होनी चाहिये कि जो काम हम कर रहे हैं वह सबकी भलाअीका है, अिसलिअे भगवान् सबको आज नहीं तो कल अनुकूल प्रेरणा जरूर देगा। तीसरी बात कार्यकर्ताओंका अेक-दूसरे पर पूर्ण विश्वास और प्रेम होना चाहिये। समझना चाहिये कि हम सब अेक ही भगवान्की भक्तिमें लगे हुअे हैं। अिसलिअे छोटी-छोटी बातोंमें मतभेद हुआ, तो मतका आग्रह नहीं रखना चाहिये। दूसरोंके दोषोंको ढांकना चाहिये, सुधारना चाहिये। पर अनुराग कायम रखना चाहिये।"

ठाकुरपटनामें विनोबाजीने कहा, "स्वराज्यके बाद अहिंसा शक्ति यानी निर्भयता हम नहीं ला सके तो हमारे स्वराज्यका कोअी अर्थ नहीं है। अिसके लिअे हमें दो व्रत लेने होंगे। अेक तो यह करना होगा कि हमारे व्यक्तिगत स्वार्थको समाजमें लीन करना होगा। और दूसरा यह कि हमको कोअी धमकाता है, शरीरको तकलीफ देता है, अिस वास्ते हम अुससे डरें या अुसके वश हो जायें यह बात छोड़ देनी चाहिये। अितना हम करते हैं तो हम बचेंगे और दुनियाको भी बचा सकेंगे। फिर चाहे किसी भी देशके हाथमें पेटीभर प्लूटोनियम आ जाय या दस पेटी आ जाय अुससे डरनेका कोअी कारण नहीं है।" अुन्होंने कहा कि हमें यह सीखना होगा कि हम शरीर नहीं हैं। शरीरको कोअी सताता है तो अुसके वश होनेकी कोअी जरूरत नहीं। हम तो आत्मा हैं, जो अमर है। भूदानका आधार अिन दो मूलभूत सिद्धांतों पर है कि आत्मा व्यापक है और आत्मा निर्भय है। आखिरमें अुन्होंने हिन्दुस्तानकी माताओंसे अपील की और कहा कि ये दो बातें जो हमारी ब्रह्म-विद्यामें हैं, वह ब्रह्म-विद्या अपने बच्चोंको बचपनसे दूधके साथ पिलाअिये, आप अपने लड़कोंको यह शिक्षा दीजिये कि 'अरे लड़के, तू अिस समाजमें है, समाजमय है, तू देह नहीं, तू व्यक्ति नहीं, तू आत्मा है, समाज है, तुझे किसीसे डरनेका कोअी कारण नहीं है।'

अुत्कलके शिक्षामंत्री विनोबाजीसे मिलने आये थे। अुनके साथ नयी तालीम, अुड़िया लिपिमें सुधार, विकेन्द्रीकरण, अुच्च शिक्षण अित्यादि विषयों पर लगभग तीन घंटे चर्चा हुअी।

युनिवर्सिटी शिक्षणके संबंधमें विनोबाने कहा, "देहातमें 'युनिवर्से' है। अिसलिअे देहातमें 'युनिवर्सिटी' बन सकती है। हरअेक ग्राम चाहे वह कितना भी छोटा हो सारी दुनियाका प्रतिनिधि है। और दुनिया थोड़े अंशमें वहां मौजूद है। सृष्टिके साथ गांवोंका प्रत्यक्ष संबंध आता है अिसलिअे सृष्टि-विज्ञान, अुसी तरह प्राणी-शास्त्रका ज्ञान, खेतीका ज्ञान तथा ग्रामोद्योग भी देहातमें चला सकते हैं। गांवमें मानव-समाज वर्षोंसे चला आया है, अिसलिअे वहां अितिहास और समाज-शास्त्रका ज्ञान भी मौजूद है। गांवमें अेक-दूसरेके साथ निकट संपर्क आता है। अिसलिअे नीति-शास्त्र और धर्म-शास्त्र वहां विकसित हो सकता है। जो आसमान सर्वत्र है वही गांवमें है। अिसलिअे ग्रह, नक्षत्र, तारे अित्यादि वहां भी दीखते हैं। अिसलिअे साहित्यका ज्यादा विकास गांवमें ही हो सकता है। हम व्यास और वाल्मीकि ऋषिकी आजकलके शहरोंमें कल्पना नहीं कर सकते। अिन सबके लिअे गांवमें बहुत ज्यादा श्रम-दानकी भी जरूरत नहीं है। निरीक्षण और प्रयोगकी अधिक जरूरत रहेगी। अिसलिअे गांवके लड़कोंको शहरकी युनिवर्सिटीमें जाकर देखनेका मौका आयेगा और शहरवालोंको भी गांवमें आकर वहांकी बातें सीखनेका मौका आयेगा। अिसमें मुख्य बात यह है कि सत्पुरुषोंको ग्राम-निष्ठा बढ़ानी चाहिये। हमारे पूर्वजोंने परिव्राजक संन्यासीकी योजना अिसीलिअे की थी। संन्यासी यानी 'वाकिंग युनिवर्सिटी'।" आखिरमें विनोबाजीने कहा कि हरअेक मनुष्यका घर और खेत है प्रयोग-शाला, हरअेक वानप्रस्थ है शिक्षक, हरअेक परिव्राजक संन्यासी युनिवर्सिटी है, और विद्यार्थी गांवके लड़के हैं, जो जिज्ञासु हैं, सीखना चाहते हैं।

७–३–'५५ कुसुम देशपांडे

अहिंसा-सप्ताह

बन्धुओ,

हमें आप लोगोंको शान्ति और भूतदयाका यह संदेश पहुंचाते हुअे, जो हमें आशा है सारे प्राणियोंके लिअे सुखका स्रोत सिद्ध होगा, बड़ी प्रसन्नताका अनुभव होता है। जीवन हमें मिली हुअी सबसे मूल्यवान् देन है और हमें किसी प्राणीका जीवन, वह छोटा हो या बड़ा, अुसके समयके पूर्व खतम करनेका कोअी अधिकार नहीं है। मनुष्यों और दूसरे प्राणियोंके कष्ट कम करना और अुन्हें दूर करना हमारा परम कर्तव्य है। अगर हम विश्व-शांति चाहते हैं तो हमें सब प्राणियोंको सुखी बनानेकी पूरी कोशिश करनी चाहिये।

अिस अहिंसा-आन्दोलनने, जिसे हमने छोटे पैमाने पर सन् १९२५ में शुरू किया था, पिछले ३० सालमें क्रमशः काफी प्रगति की है। सीलोनमें मवेशियोंका कत्ल बन्द करवानेके लिअे कानून बनवाना और दुनियामें अहिंसा-सप्ताहका प्रचार करना — ये अिस आन्दोलनके मुख्य अुद्देश्य हैं।

चूंकि यह आन्दोलन सारे विश्वके लिअे है और चूंकि अुसका कोअी राजनीतिक या संकीर्ण साम्प्रदायिक हेतु नहीं है, अिसलिअे हम सबसे अनुरोध करते हैं कि वे अिस सप्ताहमें शरीक हों और अुसे मनायें। यह सप्ताह प्रतिवर्ष मअी महीनेके पहले सप्ताहमें मनाया जाता है। सप्ताहमें नीचे लिखे तीन नियमोंका पालन होना चाहिये:

१. किसी प्राणीकी हिंसा न करना,

२. शुद्ध शाकाहारी भोजन करना,

३. जिन पशुओंसे हम काम लेते हैं अुन्हें प्रतिदिन ११–३० से १ बजे तक विश्राम देना और अिन दिनों पशुओं द्वारा खींची जानेवाली सवारियोंका अुपयोग न करना।

अिसके सिवा, देशमें अन्नका अुत्पादन बढ़ाने और अपने मानव-बंधुओंको मांसाहारसे निवृत्त करनेके लिअे हम सबसे प्रार्थना करते हैं कि वे पहली मअी, प्रातःकाल ६–३० से शुरू करके मअी और जूनके महीनोंमें जितने अन्नोत्पादक पौधे लगा सकें, लगायें।

यूनीवर्सल कालेज, पनडुरा, सीलोन (अंग्रेजीसे) डब्ल्यू० अेस० फरनैन्डो प्रिन्सिपाल

ठक्करबापा

[जीवन-चरित्र]

लेखक : कान्तिलाल शाह

अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ५–०–० डाकखर्च १–२–०

प्राप्तिस्थान : नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद–१४
सस्ता साहित्य मंडल, नअी दिल्ली

स्वस्थ जीवन और औषधि

अभी हाल ही में ११ मार्च, '५५ को पेनिसिलिनके आविष्कर्ता अलेक्जेन्डर फ्लेमिंगका देहांत हुआ। अेक प्रसिद्ध और प्रामाणिक लोक-हित-कर्ता दिवंगत हो गया। आगा खां महलमें पूज्य 'बा' जब अपने अैहिक जीवनके अन्तिम क्षण गिन रही थीं, अुस वक्त यह आशा प्रगट की गअी थी कि यदि हवाअी जहाजसे समय पर पेनिसिलिन पहुंच जाता तो शायद 'बा' बच जातीं। विज्ञानका अुपयोग मनुष्यके स्वास्थ्यका संरक्षण करनेके लिअे जिस मात्रामें होगा, अुस मात्रामें विज्ञान भी अीश्वरकी विभूति साबित होगा। परंतु केवल शारीरिक व्याधिके निराकरणसे मनुष्यकी शारीरिकता अगर बढ़ने लगे, तो विज्ञान आसुरी माया भी साबित हो सकता है। असली सवाल यह है कि क्या वैज्ञानिकता मनुष्यको प्रकृति-परायण बनानेमें है? विज्ञानवादी तुरन्त अुत्तर देगा हर्गिज नहीं। विज्ञान तो प्रकृति पर विजय पानेके लिअे है। परंतु फिर सवाल होता है कि प्रकृति पर विजय किस लिअे? जीवन समृद्ध और व्यापक बनानेके लिअे ही न? सुख तथा स्वास्थ्य सार्वत्रिक और चिरस्थायी बनानेके लिअे ही न? क्या अुपचार और औषधियों पर निर्भर रहनेवाले जीवनमें प्रकृति पर विजय है? क्या केवल शारीरिक व्याधि और हानिके प्रतिबन्धसे मनुष्यके स्वास्थ्यका संरक्षण हो सकेगा? आज चिकित्सा और रोग-निवारणकी कलामें अुत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। परंतु दूसरी ओर मस्तिष्क और हृदयकी बीमारियां बढ़ रही हैं। डॉक्टर लोग दवाके साथ-साथ खुली हवाका सेवन और अन्य तरहका व्यायाम भी बतला देते हैं। यह भी अुनकी चिकित्सा और अुपचारका अनुपान ही माना जाता है। वैज्ञानिक आविष्कारोंसे शारीरिक व्याधिका निराकरण हो, अितना ही काफी नहीं है। तब तो यह मानना होगा कि मनुष्यके परिश्रम और अुद्योगके साथ अुसके आरोग्यका कोअी संबंध नहीं है। यदि अैसा होता तो कारखानोंमें स्वच्छ तथा स्वास्थ्यप्रद वातावरण रखनेके विषयमें अितना आन्दोलन क्यों किया जाता? स्वस्थ और स्वच्छ जीवनके लिअे गुणकारी औषधियोंका जितना महत्त्व है, अुससे कहीं अधिक महत्त्व अेक दूसरेको सुखी और प्रसन्न करनेके अुद्देश्यसे किये गये परिश्रमका है।

अेक तरफ पेनिसिलिनके आविष्कर्ता अैसे लोकोपकारी, वैज्ञानिक रोग-निवारणके अचूक अुपायोंकी खोज करते हैं, तो दूसरी तरफ विज्ञानके नाम पर मानवीय जीवनको यन्त्रावलंबी बनाकर मानवीय शरीरको निरुपयोगी बनानेकी चेष्टा भी होती है। क्या स्वास्थ्यकर और कलात्मक सहपरिश्रम आरोग्यके लिअे अेक आवश्यक अुपचार नहीं है? विज्ञानसे क्या अक्सीर दवाओंकी बहुतायत और सुख-सामग्रीकी अधिकता ही होगी? क्या अुससे मनुष्यकी अुद्यमशीलताका और गुणोंका ह्रास ही होगा?

ये सवाल सहसा मनमें अुठते हैं। जीवनदायी और आरोग्यदायी वैज्ञानिक औषधियोंके तपस्वी आविष्कर्ताओंको हम आदरपूर्वक शतशः प्रणाम करते हैं, लेकिन अुनकी तपस्या फलद्रूप तब होगी जब कि अुनके विज्ञानके पीछे आस्तिकताकी प्रेरणा होगी और मानवताका दर्शन होगा। पेनिसिलिनके आविष्कर्ताके देहान्तका समाचार सुनकर हठात् ये विचार मनमें अुठे। यहां जो कुछ कहा गया है, अुससे अुनके आविष्कारका महत्त्व किसी प्रकार कम नहीं होता। अैसे जीवनदायी आविष्कारके आविष्कर्ताकी स्मृतिमें हम अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

('भूदान-यज्ञ' से) **दादा धर्माधिकारी**

आरोग्यकी कुंजी

लेखक — **गांधीजी**; अनु० — **सुशीला नय्यर**

कीमत ०-७-० डाकखर्च ०-२-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

पुरी सर्वोदय-सम्मेलनका प्रस्ताव

(ता० २७-३-१९५५)

पिछले चार वर्षोंमें भूदान-आन्दोलनने जो प्रगति की है, वह जनतासे छिपी नहीं है। देशके हर भागमें यदि सघन कार्य किया गया होता तो और भी ठोस प्रगति हुअी होती। जहां-जहां भूदानका सन्देश जनता तक अच्छी तरह पहुंचाया जा सका है, वहां जनताने बड़ी श्रद्धासे अुसका स्वागत किया है। यही कारण है कि भूदान जन-आन्दोलन बन सका है।

परन्तु हमारा लक्ष्य बहुत दूर है। सन् सत्तावन तक क्रान्ति सफल करनेका हमने संकल्प किया है। अब दो वर्षका समय बच रहा है। यह समय हमारी परीक्षाका है। सारा संसार अिस आन्दोलनकी गतिविधिकी तरफ बड़ी आशा और अुत्कंठासे देख रहा है, जिसमें यह संकेत छिपा हुआ है कि अिस समय अहिंसक प्रक्रिया कसौटी पर है।

सर्वोदय विचारमें विश्वास रखनेवाले अैसे बहुतसे भाअी-बहन देशमें हैं जो राजतन्त्रमें, राजनीतिक पक्षोंमें, रचनात्मक तथा अन्य क्षेत्रोंमें काम कर रहे हैं। अिनका कुछ सहयोग भूदान-आन्दोलनको प्राप्त हुआ है। लेकिन अधिक शक्ति अुनके अपने-अपने विविध कार्योंमें लग रही है। अिसमें संदेह नहीं कि अुनके कार्य भी यों तो अुपयोगी और अच्छे हैं, लेकिन अब समय आ गया है कि सर्वोदयको माननेवाले सभी लोग गम्भीरतासे सोचें कि क्या वर्तमान समाज-व्यवस्थाका शीघ्रसे शीघ्र परिवर्तन करना आवश्यक नहीं है? सर्वोदयमें विश्वास करनेवाले लोग वर्तमान समाजके अन्याय तथा अनीतिके सामने चुप नहीं बैठ सकते और न वे स्थितिस्थापक ही बन सकते हैं। सर्वोदयकी प्रक्रियाके अनुसार सच्चा समाज-परिवर्तन तभी होता है, जब कि विचार और मूल्योंमें परिवर्तन होता है। सर्वोदयकी स्थापना अिसके बिना असम्भव है, चाहे समाजमें कितने ही अुलट-फेर क्यों न हुअे हों। हम यह भी जानते हैं कि मूल्यों और विचारोंका परिवर्तन शासनके द्वारा नहीं किया जाता। यह कार्य जनताके पास जाकर और अुसे प्रेमसे समझाकर ही हो सकता है। भूदान तथा अुसके साथ चलनेवाले दूसरे आन्दोलन अिसी प्रक्रियाके अंगभूत हैं। क्रान्तिकी यह प्रत्यक्ष और परिपूर्ण प्रक्रिया है।

जमाना अहिंसाको चुनौती दे रहा है। क्या अहिंसानिष्ठ व्यक्ति अिस समय अिस चुनौतीको स्वीकार करनेसे अिनकार कर सकते हैं? सन् १९५७ का संकल्प अिसी चुनौतीका अुत्तर है। अिस संकल्पमें हमारा यह विश्वास निहित है कि अिस युगकी समस्याओंका समाधान अहिंसासे ही हो सकता है। अहिंसक प्रक्रियाकी परीक्षाके अिस कठिन अवसर पर सर्वोदय तथा अहिंसामें निष्ठा रखनेवाले सभी व्यक्तियोंका सर्व-सेवा-संघ विनयपूर्वक आवाहन करता है कि वे कमसे कम दो वर्षोंके लिअे अन्य सभी कार्योंको छोड़कर भूदान-यज्ञमें अपनी सारी बुद्धि-शक्ति और कार्य-कुशलता समर्पण करें।

विषय-सूची

		पृष्ठ
सम्मान्योंकी आवभगत	मगनभाई देसाई	५७
कारखाने और बेकारी	मगनभाई देसाई	५८
नयी आर्थिक नीतिके सिद्धान्त — १		५९
भूदान-प्रवृत्तिका लेखा-जोखा	मगनभाई देसाई	६०
अुड़ीसामें विनोबा — २	कुसुम देशपांडे	६१
अहिंसा-सप्ताह	डब्ल्यू० अेस० फरनैन्डो	६३
स्वस्थ जीवन और औषधि	दादा धर्माधिकारी	६४
पुरी सर्वोदय-सम्मेलनका प्रस्ताव		६४